

Hydel and Irrigation Projects has caused innumerable suffering to the regions around such Projects located in the hill States/regions. Two such instances are the hardships to the people of Bilaspur and Una Districts of Himachal Pradesh by the construction of Bhakra Nangal Project and the people of Kangra District by the Pong Dam, Roads and Bridges have been/submerged. The Central Government and the Bhakra-Beas Management Board should finance the construction of the following six bridges to overcome this hardship on Sutluj River and Tributary streams :—

- (i) Lehar Bridge (Mandi-Bilaspur)
- (ii) Alhi Khad (Bilaspur District)
- (iii) Bhajwani (Near Auhar-District Bilaspur)
- (iv) Bagphal (in Jhanduta Block—Bilaspur District)
- (v) Mandwan (—do— —do—)
- (vi) Bridge over Lunkhar Khad in between Lathiani and Mandli (Una District).

All of them should be included in Annual Plan for 1984-85 and completed in 7th Five-Year Plan.

(vi) Need for taking immediate protective measures against exploitation of contract labour from Orissa.

SHRIMATI JAYANTI PATNAIK (Cuttack) : Thousands of migrant workers from Orissa continue to be exploited outside the State every year. Recently 45 tribal youths were recruited from the Barbil mining belt of Keonjhar district by the agents of labour contractor and sent to work at the site of a power house near Kamrup in Assam. These simple people are lured away from their villages by the labour contractors and their agents with offers of lucrative jobs, free board and lodging and other facilities. But, when they reached the work sites, they were virtually treated like slaves. They were forced to work for 12 hours a day and not paid the promised wages. They were deprived

of even basic medical facilities. Those who try to leave are intimidated and beaten by muscle men employed by the contractors.

In another case 36 persons including 21 women were recruited from Mayurbhanj and Balasore Districts of the State and sent to Nepal. A group of boys recruited from Ganjan District was recently sent to work at the site of thermal plant in Punjab. They are forced to work in the most inhuman conditions. It is regrettable that three innocent people are exploited despite the enactment of Inter-State Migrant Workmen's Act, 1979. Unless immediate protective measures are taken, the plight of these poor people can't be mitigated. An immediate inquiry should be conducted and these poor people should be saved from exploitation.

(vii) Need for taking steps for improvement in the education System

श्री बी. डी. सिंह : (फूलपुर) : आज जब सरकार से यह अपेक्षा की जाती है कि देश के सभी बालक-बालिकाओं के लिए वह समान शिक्षा की व्यवस्था करती है, सरकार की नीतियों के कारण देश में दोहरी शिक्षा व्यवस्था की जड़ें व्याप्त होती जा रही हैं। इसमें दो राय नहीं हो सकती कि किसी भी नागरिक के व्यक्तित्व के विकास के लिए, समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए, शिक्षा एक बुनियादी जरूरी चीज है। परन्तु ग्रामीण अंचलों में रह रहे एवं नगरों के निर्धन परिवारों के बालक-बालिकाओं की शिक्षा की कैसी व्यवस्था की जा रही है? इनके लिए उच्च शिक्षा की तो बात छोड़िए, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा की कैसी व्यवस्था है? शिक्षा का स्तर दिन व दिन तेजी से गिरता जा रहा है। शिक्षा स्तर में होते हुए तीव्र ह्रास के लिए यह दोहरी शिक्षा व्यवस्था भी उत्तरदायी है, यह व्यवस्था निर्धन नवयुवकों के मार्ग में बाधा है। नगरों के सुविधा सम्पन्न परिवार किसी भी कीमत पर पब्लिक स्कूलों में अपने बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था

कर लेते हैं, परन्तु निर्वन बच्चे अच्छी शिक्षा से बंचित रह जाते हैं। नतीजा यह होता है कि नाना प्रकार की प्रतिस्पर्धाओं में ये गरीब नवयुवक पीछे रह जाते हैं। शिक्षा की दोहरी व्यवस्था यदि दूर न की गई तो सामान्य जनों की शिक्षा का स्तर ऊंचा नहीं उठ सकेगा और शिक्षा के आधार पर शोषण जारी रहेगा। स्थिति दिन-ब-दिन गम्भीर होती जा रही है। लाइलाज होने के पहले रोकथाम आवश्यक है।

अतएव मैं माननीय शिक्षा मंत्रों से निवेदन करूंगा कि वे गम्भीरता से इस पहलू पर विचार करें, शिक्षा शास्त्रियों से आवश्यक परामर्श करें, सामान्य शिक्षा में सुधार के माध्यम से तथा अन्य उपायों द्वारा दोहरी शिक्षा व्यवस्था को क्रमशः समाप्त करने की दिशा में तत्काल आवश्यक कदम उठावें।

(viii) Need to take steps to tackle the extremist activities in North-Eastern

प्रो० अजित कुमार मेहता (समस्तीपुर) : पूर्वोत्तर अंचल में विद्रोही गतिविधियों में फिर से तेजी आने के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। केन्द्रीय सरकार इसको शान्त करने के लिए विद्रोहियों की संस्थाओं पर पाबन्दी लगाने का विचार कर रही है पर यह समस्या का कारगर इलाज नहीं है। आपात स्थिति के बाद चुनावों में मध्यमार्गियों की सरकार बनी थी तो राजनैतिक माहोल में परिवर्तन आया था और 1978 के बाद विद्रोहियों की ताकत कम हुई। लेकिन पिछले दो वर्षों से हालत फिर बिगड़ रही है। इसी से आराकान की पहाड़ियों में "ईसाक स्वू" और "मुईवाह" की स्थिति मजबूत हुई है। सेना ईसाक स्वू उत्तर इलाकों में तथा तांगखुल मुईवाह मणिपुर के तांगखुल इलाकों के पार अपना केन्द्र बनाए हुए है।

उत्तर वर्मा के अरुणाचल से लेकर मणिपुर तक के सीमावर्ती इलाकों में नागा विद्रोहियों के अड्डे बने हुए हैं। वे अरुणाचल के तिरप और नागालैंड के मौन जिलों के उस पार से दुर्गम सीमा का लाभ ले र घुसपैठ करते रहते हैं।

ऐसी परिस्थिति में विद्रोही गतिविधियों को केवल कड़े कानूनों और सेना के जरिए ठण्डा करना कठिन है। इन तरीकों से आम नौजवानों में विद्रोही होने की प्रवृत्ति ही पनपती है। विद्रोह यहां ऐतिहासिक कारणों से अपनी मनोवैज्ञानिक जड़ें जमा चुका है। इस का हल राजनैतिक माहोल के परिवर्तन से ही हो सकता है और सरकार को स्थिति बिगड़ने से पहले ही सचेस्ट होना चाहिए।

(ix) Need to open an agricultural College at Sitapur.

श्री राम लाल राही (मिसरिख) : उत्तर प्रदेश के जनपद सीतापुर तथा इसके इर्द-गिर्द जनपदों में इन्टरमीडिएट कक्षाओं तक कृषि विज्ञान पढ़ाने की सुविधा तो है, परन्तु इसके लगभग 150 किलोमीटर के इर्द-गिर्द बसे नगरों, जनपदों में कोई भी स्नातक अथवा स्नातकोत्तर कृषि विज्ञान शिक्षा के लिए सुविधा नहीं है। कोई कालेज अथवा डिग्री न तो निजी क्षेत्र में है और न सार्वजनिक क्षेत्र में है जिनमें कृषि विज्ञान पढ़ाया जाता हो। कृषि विज्ञान में इन्टर तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद इन विषयों में उच्च शिक्षा के लिए बहुत दूर जाने पर अधिकांशतः नाम लिखाने के लिए स्थान रिक्त नहीं मिलने और कुछ छात्र ऐसे भी हैं जो अपनी गरीबी के कारण बहुत दूर पढ़ने नहीं जा सकते। अभी तक लखनऊ परिक्षेत्र तथा इसके इर्द-गिर्द पिछड़े जनपदों में कहीं भी कृषि विज्ञान की सुविधा के लिए स्नातक